Lilavati Hospital and Research Centre

More than Healthcare, Human Care

जनपथ समाचार

स्पाइना बिफिडा के बढ़ते मामले भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य पर बोझ

मुंबई । महाराष्ट्र के साथ देशभर में स्पाइना बिफिडा (जन्मदोष) बीमारी के मामले बढ़ रहे हैं। लेकिन इस बिमारी के बारे में अज्ञानता होने कारण 75 प्रतिशत से अधिक बच्चों को समय रहते इलाज नही मिलता। यह कोई अनुवांशिक बीमारी नहीं हैं, बल्कि गर्भावस्था के शुरू में माताओं में फोलिक एसिड की कमी के कारण बच्चे को यह समस्या होती हैं। जिस कारण, शिशु में आजीवन विकलांगता, विकृती, निर्भरता और जीवन की गुणवत्ता में कमी आ सकती है। यह एक प्रकार का न्यूरल ट्यूब डिफेक्ट है। स्पाइना बिफिडा का निदान गर्भावस्था के दौरान या बच्चे के जन्म के बाद किया जा सकता है। कमजोरी, लकवाग्रस्त पैर की मांसपेशियां, दौरे, विकृत पैर, असमान कूल्हे, और मूत्राशय की समस्या यह स्पाइना बिफिडा की लक्षणं हैं। महिलाएं आवश्यक विटामिन और फोलिक एसिड की खुराक लेने से बच्चों में स्पाइना बिफिडा के 80 प्रतिशत मामलों को रोक सकता है।

इसे ध्यान में रखते हुए लिलावती अस्पताल के बाल चिकित्सा सर्जरी विभाग ने स्पाइना बिफिडा फाउंडेशन के साथ मिलकर 30 जनवरी 2024 को अस्पताल में नि:शुल्क शिबीर का आयोजित किया जा रह है। यह पहल समाज में स्पाइना बिफिडा के बारे में जागरूकता बढ़ाने है।

लिलावती अस्पताल के सलाहकार बाल चिकित्सा सर्जन डॉ. संतोष करमरकर ने कहाँ की, स्पाइना बिफिडा रीढ़ की हड्डी का एक जन्म दोष है जो बचपन में पक्षाघात (पोलियो से भी बदतर) का कारण बनता है, और भारत में हर साल 40,000 से अधिक बच्चे इस जन्म दोष के साथ पैदा होते हैं। स्पाइना बिफिडा भारत में सबसे आम जन्म दोष है और इसकी संख्या दुनिया में सबसे ज्यादा है। भारत में हर साल प्रति 1,000 जीवित बच्चों में स्पाइना बिफिडा के 4-5 मामले होते हैं। यह स्वीकृत स्तर से 4 गुना है। विकसित दुनिया के अधिकांश हिस्सों में प्रति 1,000 पर 1 से भी कम मामले हैं। पेरिकॉन्सेप्शनल अवधि के दौरान फोलिक एसिड की खुराक लेने के महत्व के बारे में ज्ञान की कमी इस स्थिति में योगदान देने वाला एक प्रमुख कारक है।